डा० कुमारी चम्पा
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज

भाषा के प्रकार

भाषा के तीन रूप है।
1) मौखिक भाषा
2) लिखित भाषा
(3) सांकेतिक भाषा

मौखिक भाषा

भाषा का वह रूप जिसमें एक व्यक्ति बोलकर हम अपनी बात, विचार प्रकट करता है और दूसरा व्यक्ति सुनकर उसे समझता है, मौखिक भाषा कहलाती है।

अथवा

जिस ध्वनि का उच्चारण करके या बोलकर हम अपनी बात दूसरों को समझाते है, उसे मौखिक भाषा कहते है।

उदाहरण -

टेलीफोन, दूरदर्शन, भाषण, वार्तालाप, नाटक, रेडियो आदि

यह भाषा का प्राचीनतम रूप है। मनुष्य ने पहले बोलना सीखा। इस रूप का प्रयोग व्यापक स्तर पर होता है।

मौखिक भाषा की कुछ प्रमुख विशेषताएँ -

* यह भाषा का अस्थायी रूप है।
* उच्चरित होने के साथ ही समाप्त हो जाती है।
* इस रूप की आधारभूत इकाई 'ध्वनि' है। विभिन्न ध्वनियों के संयोग से शब्द बनते है। जिनका प्रयोग वाक्य तथा विभिन्न वाक्यों का प्रयोग वार्तालाप में होता है।
* यह भाषा का मूल और प्रधान रूप है।

Page No.
Date / 201

लिखित भाषा -

भाषा का वह रूप जिसमें एक व्यक्ति लिखकर विचार या भाव प्रकट करता है, दूसरा पढ़कर उसे समझता है, तो वह लिखित भाषा कहलाती है।

अथवा,

जिन अक्षरों या चिन्हों की सहायता से हम अपने मन के विचारों को लिखकर प्रकट करते हैं, उसे लिखित भाषा कहते हैं।

उदाहरण -

पत्र, लेख, पत्रिका, समाचार पत्र, कहानी जीवनी, संस्मरण, तार, आदि।

उच्चारित भाषा की तुलना में लिखित भाषा का रूप बाद का है। मनुष्य को जब यह अनुभव हुआ कि वह अपने मन की बात दूर बैठे व्यक्तियों तक या आगे आने वाली पीढ़ी तक भी पहुँचा दे तो उसे लिखित भाषा की आवश्यकता हुई। अतः मौखिक भाषा को स्थायित्व प्रदान करने हेतु, उच्चरितध्वनि प्रतीकों के लिए लिखित चिन्हों का विकास हुआ।

लिखित भाषा की आधारभूत इकाई वर्ण है।

लिखित भाषा की विशेषताएँ -

* यह भाषा का स्थायी रूप है।
* इस रूप में हम अपने भावों और विचारों को अनंत काल के लिए सुरक्षित रख सकते हैं।

* इस रूप का आधार भूत इकाई वर्ण है, जो उच्चरित ध्वनियों को अभिव्यक्त करते है।
* यह भाषा का गौण रूप है।

सांकेतिक भाषा

जिन संकेतों के द्वारा बच्चे या गूँगे अपनी बात दूसरों को समझाते है वह, सांकेतिक भाषा है।
अथवा,
जब संकेतों द्वारा बात समझाई या समझी जाती है, तो वह सांकेतिक भाषा कहलाती है।
जब कोई व्यक्ति भाषा के दो रूप मौखिक और लिखित की जानकारी प्राप्त नही कर सकता, तो इस स्थिति में व्यक्ति अपनी भावनाओं और मनोदशा को व्यक्त करने के लिए हाथों का साहारा लेता है। ऐसे व्यक्ति जो शारीरिक रूप से दिव्यांक होते है और जो मूकबाहिर बच्चे होते है, ये बच्चे और व्यक्ति अपनी भावनाओं को और इच्छाओं को हाथों और अंगुलियों के इशारे तथा चहरे की हाव-भाव की सहायता से अन्य व्यक्ति को बताते है। भाषा की इस प्रक्रिया को ही सांकेतिक भाषा कहते है।

हमारे देश भारत में जिस सांकेतिक भाषा का प्रयोग एवं प्रशिक्षण किया जाता है। वह अफ्रीका की सांकेतिक भाषा है।

सांकेतिक भाषा का अध्ययन व्याकरण में नही किया जाता है।